कृषि लोक
कृषि एवं किसान के लिए ई-पत्रिका
http://www.rdagriculture.in
e-ISSN No. 2583-0937
कृषि लोक, खंड 02 (04): 184-186, 2022

मधुमक्खी पालन एक लाभदायक व्यवसाय

डॉ मनोज कुमार जाट, डॉ सुनीता यादव और सिंधु श्योराण

कीट विज्ञान विभाग,

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

ईमेल:

Received: **September 22, 2022;** ***Revised:*** **September 23, 2022** ***Accepted:*** **September 25, 2022**

मधुमक्खी या मौनापालन सस्ता व कम मेहनत वाला व्यवसाय है। यह व्यवसाय किसानों और अन्य ग्रामीण लोगों को शहद, पराग, मोम आदि उत्पाद प्रदान करता है प्राप्त होता है। शरीर को स्वस्थ व कांतिमय बनाने में शहद विषेष भूमिका निभाता है वहीं दूसरी और अनेक रोगों से उसकी रक्षा करता है। कृषि व फल उद्यानों की परागण की क्रिया तकरीबन 80 से 90 प्रतिषत् मधुमक्खी से होती है, जिसके फलस्वरुप फसल व फलों की पैदावार में वृद्धि होती है। इसके अभाव में उत्पादकता गिर जाती है। इस कीट की पूर्ण जानकारी व प्रषिक्षण से इसे पालकर काफी लाभ कमाया जा सकता है। मधु केवल एक मीठा पदार्थ ही नहीं बल्कि इसमें और भी अनेकों गुण विद्यमान है पहला तो यह है कि यह खाते ही शरीर में तुरन्त पच जाता है साथ ही शहद रक्तवर्धक, रक्त शोधक, तथा आयुवर्धक माना गया है। इससे प्राप्त मोम का प्रयोग क्रीम, मरहम, प्लास्टिक के सामान, स्याही, पॉलिष तथा दवाई इत्यादि में किया जाता है।

मधुमक्खी पालन को एक व्यवसाय के रुप में अपनाने से पहले निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए।

e-ISSN No. 2583-0937

स्थान का चयन

1. मौनालय के पास 2 से 3 किलोमीटर क्षेत्र में वनस्पत्ति की भरमार हो ताकि मधुमक्खी को वर्ष भर पराग व मकरन्द मिल सके।
2. चयनित स्थान समतल होना चाहिये।
3. चयनित स्थान पर पर्याप्त मात्रा में ताजा पानी, हवा, छाया तथा धूप होनी चाहिये।
4. मौनालय के पास अनावष्यक पेड़-पौधों व पानी का जमाव नहीं होना चाहिये।
5. चयनित स्थान चींटी, दीमक व मौन शत्तु से मुक्त होना चाहिये।

मौनापालन का उपयुक्त समय

मौनापालन व्यवसाय फरवरी-मार्च या अक्टुबर - नवम्बर में आरम्भ करना चाहिये, प्रायः शरद ऋतु में व बसन्त ऋतु में सरसों व अन्य फसलों के अलावा फूलों की भरमार रहती है, मक्खिओं को मधुस्राव भी प्राप्त मात्रा में मिलता है साथ-साथ रानी मक्खी अण्डे भी काफी संख्या में देती है।

मौन पालन हेतु सामग्री

इस व्यवसाय हेतु लकड़ी के बने बक्से, मुँह रक्षक जाली, रानी, हाथों हेतु दस्ताने, धुँआदानी तथा बक्सा औजारों की आवष्यकता पड़ती है। शहद निकालने के लिए शहद निकालने की मषीन तथा मोम की शीट आदि की जरुरत पड़ती है।

मधुमक्खी की खरीद

शुरुआत में व्यवसाय शुरु करने के लिए अधिक मधुमक्खियाँ व मौन मण्डल नहीं खरीदने चाहिये क्योंकि अनुभव की कमी से मौन मण्डल के घर छोड़कर जाने की संभावना रहती है। अतः शुरु में 1 से 2 मौन मण्डल ही खरीदें। मौन मण्डल खरीदते समय निम्न बातें ध्यान में रखें:-

1. मौनामण्डल बहुसंख्यक होना चाहिये,
2. छत्ते कटे फटे न हों, तथा पहले से रोग ग्रसित नहीं हो।
3. मौन पालन हेतु ज्यौलीकोट बाक्स उपयुक्त माने गये है अतः इन्हें ही प्रयोग में लावें।
4. मौन पालन हेतु सामग्री या साज सामान किसी अनुभवी पालक के सहयोग से ही खरीदना चाहिये।
5. इसके लिए युरोपीय मधुमक्खी "एपिस मैलीफेरा, ही खरीदें क्योंकि यह मक्खियाँ अधिक मात्रा में तथा अच्छी किस्म का शहद इकट्ठा करती हैं।
6. कॉलोनी खरीदते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिये कि रानी युवा अवस्था में तथा फ्रेम पर लगे हुये छत्ते के कोषों में पर्याप्त मात्रा में अण्डे, लाखा तथा शहद हों,
7. नर मक्खियाँ कम होनी चाहिये क्योंकि ये पराग तो कम लाती ही है साथ-साथ श्रमिक मधुमक्खियों से ज्यादा आहार ग्रहण करती है।

बक्सों का स्थानान्तरण

बक्सों के स्थानान्तरण का कार्य विषेष रुप से रात्रि को ही करना चाहिये। इसके लिए नीचे का तख्ता, षिषुकक्ष तथा अन्दर के ढक्कन हो लोहे की पत्तियाँ लगाकर आपस में जोड़ दिया जाता है। इसके अलावा प्रवेष द्वार पर जाली लगा देते हैं जिससे हवा का आवागमन बना रहें परन्तु मक्खियाँ बाहर न जा सकें। इस प्रकार बक्से को बड़ी सावधानी के साथ एक जगह से दूसरी जगह स्थानान्तरित कर दिया जाता है। इनको इस प्रकार रखते हैं कि दो बक्सों के बीच लगभग 10 फीट की दूरी रहे।

मौना प्रबन्धन या ऋतु मौना प्रबंधन

1. **ग्रीष्म ऋतु:** मौनगृह छाया में रखना चाहिये। इसके अलावा पर्याप्त मात्रा में जलापूर्ति, पराग तथा कृत्रिम भोजन देना चाहिये ताकि अधिकतम उत्पादन लिया जा सके। इसके साथ-2 मौन गृह को बोरी को गीली करके ढँककर नम रखना चाहिये।
2. **वर्षा ऋतु:** पेटिका में अधिक नमी न हो इसके लिए धूप में रखना चाहिये। भोजन के अभाव में चीनी का घोल सप्ताह में 2 बार देना चाहिये,
3. **शीत ऋतु:** यदि शीत लहर का या कोहरा का प्रकोप हो तो मौन गृह को पालिथीन, या बोरी से ढककर रखना चाहिये तथा गर्म चीनी का घोल बनाकर देना चाहिये।
4. **बसंत ऋतु:** इस ऋतु में मधु निष्कासन, मौन वंष विभाजन तथा रॉयल जैली उत्पादन पर विषेष ध्यान देना जरुरी है।

e-ISSN No. 2583-0937

शहद निष्कासन व बेचना

मधुकक्ष में छत्तों में 60-70 प्रतिषत् कोष मक्खियों द्वारा बंद कर देने पर उनसे शहद निकाला जा सकता है। इसके लिए फ्रेमों से मक्खियाँ हटाकर मधु बक्से से निकाल ली जाती है। इसके बाद चाकू को पानी में गर्म करके छत्ते से मोम की टोपियाँ उतारते हैं, इन्हें शहद निकालने वाली मषीन में रखकर घुमाया जाता है। इस प्रकार शहद अपकेन्द्रीय बल द्वारा अलग हो जाता है तथा छत्ते की रचना को कोई नुकसान नहीं पहुँचाता है तथा इसे पुनः मधुकक्ष में रख देते हैं। मधुमक्खियाँ पुनः इसमें शहद भरना शुरु कर देती है। इस प्रकार प्राप्त मधु को स्वच्छ कपड़े से छानकर साफ-सुथरी व सूखी बोतलों में भरकर बाजार में बेचा जा सकता है।

इस प्रकार उपरोक्त विधि द्वारा मौना पालन कर किसान एक मधुबक्से से करीब 20 से 25 कि.ग्रा. शहद प्रति वर्ष प्राप्त कर सकता है। साथ ही मधुमक्खियों की कॉलोनियाँ का विभाजन कर तथा उनकी संख्या दो गुनी कर सकता है तथा कॉलोनियाँ बेच भी सकता है। इस तरह मौनापालन व्यवसाय को अपनाकर अपनी आजीविका का मुख्य साधन बनाकर अत्यधिक लाभ कमाया जा सकता है।